IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक कविता के प्रवर्तक ''अज्ञेय''

डॉ0 हसीना बानो
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभागाध्यक्ष
हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
प्रयागराज।

आधुनिक कविता के प्रवर्तक अज्ञेय का जन्म एक ऐसे परिवार में सन् 1911 में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में कर्तारपुर गांव कासावां में हुआ था जिसका कोई निश्चित आवास नहीं था। उनके पिता पं0 हीरानन्द शास्त्री प्रसिद्ध विद्वान और पुरातत्ववेत्ता थे। सम्पूर्ण भारत का भ्रमण उनके रग में बस गया था। पिता के पुरातत्व विभाग में एक उच्च अधिकारी होने के कारण अज्ञेय को बचपन से ही विभिन्न भागों से, देशवासियों से और उनकी वास्तविक स्थिति से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ। वे उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में पैदा हुए, बिहार में पले–बढ़े, किशोरावस्था दक्षिण में बीती और तरुणावस्था तक पहुंचते लाहैर में बिताया। भारतवर्ष का यह काल राजनीतिक विस्फोटक काल था। बी.एस.सी. उत्तीर्ण करते ही जेल यात्रा भी करनी पड़ी। जेलयात्रा के बीच में ही उन्होंने 'भग्नदूत' और 'शेखर एक जीवनी' की रचना की। जेल जीवन से मुक्त होते ही उन्होंने साहितय और पत्रकारिता की दिशा में कदम बढ़ाया। पत्रकारिता के रूप में उन्होंने अपनी पहचान आगरा के साप्ताहिक सैनिक के माध्यम से बनायी फिर बनारसी दास के आमन्त्रण पर कलकत्ता से निकलने वाले 'विशाल भारत' के सम्पादक हुए। अपनी सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से उन्होंने जो नया तेवर, नये विचार, नयी भाषा, नयी शैली हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में निर्मित की उसे भुलाया नहीं जा सकता है। इस प्रकार 1936 में **'सैनिक'** का सम्पादन, 1937 में **'वि□ाल भारत'**, 1943 में **'तारसप्तक'** और 1947 से 1950 तक इलाहाबाद में **'प्रतीक'** का सम्पादन किया। 1951 में दूसरा **'तारसप्तक'** और 1959 में तीसरा **'सप्तक'** प्रकाशित करके नयी कविता में अपनी पूर्ण पहचान बनायी। समाचार साप्ताहिक 'दिनमान' और 'नया प्रतीक' टाइम्स ऑफ इण्डिया और नव भारत टाइम्स के भी सम्पादक रहे। उन्हें अपने देश, अपनी संस्कृति और भाषा व सभ्यता से विशेष लगाव था। उनका मन अपने देश की मिट्टी से बंधा रहा, इसका कारण था उनकी यायावरी संवेदना। उन्होंने अपने जीवन में अनेक जटिल समस्याओं की प्रतिक्रिया को रागात्मकता एवं बौद्धिकता से रूपायित कर सम्प्रेषणीयता के धरातल पर रखने का जो प्रयास किया है, उससे उनकी शाश्वत प्रयोगशीलता एवं चिरन्तन धर्म की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। अज्ञेय पूरी रचना प्रक्रिया में धर्मो की स्थिति से निकलकर अपनी पहचान बनाते है और उस चुनौती को स्वीकार करते हैं जो व्यक्ति की अनुभूति को समिष्ट की पूर्णता से सम्बन्धित करते हैं। **'आत्मनेपद'** में वे लिखते हैं– जो व्यक्ति की अनुभूति है, उसे समिष्ट तक कैसे उसकी सम्पूर्णता में पहुंचाया जाये। यह पहली समस्या है, जो प्रयोगशीलता को ललकारती है। जहां कहीं उन्होंने निम्नवर्गीय जीवन को संवेदना का आधार प्रदान किया है, वहां उनकी भाषा ऐसे ही ''नान–यू'' तत्वों से संश्लिष्ट हो जाती है। अपने काव्य विकास यात्रा के प्रारम्भिक चरण से ही अज्ञेय का प्रयोगशील व्यक्तित्व परम्परा की टकराहट से नयी संवेदना को नये रूपों में अभिव्यंजित करता है। अज्ञेय ने एक पत्रकार के रूप में, कवि एवं गद्यकार तीनों रूपों में साहित्य की अनन्य सेवा की इसके साथ ही नाटक, कहानी , निबन्ध, उपन्यास, आलोचना आदि सभी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपनी अगाध सेवा करते–करते यह साहित्य रत्न 4 अप्रैल 1987 में चिर निद्रा में लीन हो गये।

अज्ञेय का नाम कविता में प्रयोगवाद आन्दोलन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। छायावाद की अतिशय कल्पनाशीलता और सूक्ष्मता की प्रक्रिया दो रूपों से प्रकट होती है– एक रूप सामाजिक यथार्थ को उभारने वाला प्रगतिवाद का और दूसरा रूप व्यक्ति के स्वच्छ प्रेम की अभिव्यक्ति को प्रश्रय देने वाला 'प्रयोगवाद'। अज्ञेय प्रयोगवाद के पुरोधा है। 'प्रयोगवाद' की व्याख्या करते हुए उन्होंने दूसरे 'सप्तक' में लिखा है, प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं, वह साधन है और दोहरा साधन है। प्रयोग निरन्तर होते आये हैं, और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला या कोई भी रचनात्मक काय्र आगे बढ़ता है। इसके साथ ही उनका यह भी कथन है कि कवि की सबसे बड़ी समस्या साधारणीकरण और प्रेषण की है। इसी लक्ष्य से प्रेरित होकर कविता प्रयोगशीलता की ओर प्रेरित होती है। अज्ञेय काव्य रचना में कोई सामाजिक दायित्व स्वीकार

नही करते हैं। शायद इसीलिए शब्द सामर्थ्य के बावजूद वे बड़े कवि नहीं बन सकें क्योंकि वे व्यापक ीारतीय जीवन की पीड़ा से जुड़ नहीं सके। प्रेम और सौन्दर्य के वर्णन में पारम्परिक उपमानों को छोड़ देना उन्होंने श्रेयस्कर समझा है। नायिका के लिए उपयुक्त उपमान 'बिछली घास' या लहलहाती हवा में कलगी छरहरे बाजार की कहना उन्हें अधिक काव्यमय प्रतीत होता है क्योंकि उनके लिए पुराने उपमानों के दवता लोप कर गये हैं। प्रयोग को काव्य का आवश्यक तत्व मानते हैं। ये समस्याएं अनेक हैं काव्य विषय की, सामाजिक उत्तरदायित्व की, संवेदना की पुनः संस्कार की। किन्तु इन सबका स्थान इसके पीछे है, क्योंकि यह कवि वर्ग की मौलिक समस्या है और कवि को प्रयोगशाला की ओर प्रेरित करने वाली सबसे बड़ी शक्ति यही है। इस सन्दर्भ में देखे तो अज्ञेय की समस्या सम्प्रेषण के साथ एक नये अनुभव के सम्प्रेषण की हैं क्योंकि अब युग सम्बन्ध सदा के लिए बदल गया है और नही भाषा में पुराना संस्कार, जो अब क्षीण हो चुके हैं। प्रयोगशीलता की पहली प्रधान समस्या यही हो जाती है कि भाषा में नित नये अर्थ के समावेश की। इसीलिए अज्ञेय और उनके सहयोगी कविगण मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, नेमिचन्द जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरजाकुमार माथुर आदि कवि भाषा को अपर्याप्त पाकर विराम संकेतों से सीधी, तिरछी लकीरों से छोटे बड़े टाइप से, सीधी या उलटे अक्षरों से इन तमाम साधनों से जो आधुनिक युग में प्राप्त है, वे उन्हें सम्पन्न बनाना चाहते थे। इसलिए प्रयोग जितना विषय की दृष्टि से दिखाई नहीं देता, शिल्प के धरातल पर कविता की पूरी बनावट में दिखाई देता है। मुक्तक छनद को नये संस्कार प्रयोगवादी कवियों ने ही दिये है। इन्हीं भाषायी वाक्य विन्यास सम्बन्धी प्रयोगों के सहारे इसका यह मतलब भी नहीं है कि भाषा के प्रयोग प्रयोगशील कविता की कुल विशिष्टता है और प्रयोगवादी कविता के काव्य की कोई विशेषता ही नहीं। उसे और आधुनिक जीवन की संक्रमण शीलता को समझे बिना नहीं जाना जा सकता है। अज्ञेय का कथन है– आज की अनुभूतियां तीव्रतर है तो वर्जनायें भी कठोरतर कल्पनायें सब दमित है और कुण्ठित हैं, सौन्दर्य उससे अक्रान्त हैं। अपने ढंग से समझना होगा कि अनुभव के ग्रहण में जो कठिनाइयां है वे अभिव्यक्ति में किस प्रकार सुलझायी जा सकती है। अज्ञेय के छन्द प्रयोगों में परम्परा छन्द विधान से मुक्त भी है और नयी लय, गति का विकास भी है। अज्ञेय के लिए छन्द का अर्थ केवल तुक या बंधी हुई समान मात्रा नहीं है। तुक छोड़ने से छन्द समाप्त नहीं होता है, न टूट जाता है। जहां भाषा की गति में कोई कसाव है, समझना चाहिए छन्द है। तुक से कृत्रिमता आती है अतः उसे छोड़ दिया गया है। कसाव के लिए लयात्मक संगठन जरूरी है अतः उसकी रक्षा की गयी है अज्ञेय के लिए महत्वपूर्ण है कविता का रूप। रूप छन्द से व्यापक तत्व है। अज्ञेय की प्रयोगशीलता, बोलचाल की भाषा जो सृजनात्मकता देने के प्रयास में रूप लेती है परिचित शब्दों को एक नया परिवेश देती है। अज्ञेय की पूंजी है व्यवहार में आने वाले शब्द, जिनका क्रम नया है, संयोजन नया है। कल्पना अज्ञेय की दृष्टि में साधन है जिससे कविता वास्तविकता को एक अपना सम्पूर्ण रंग देती है। स्वायत्त बनाती है। अज्ञेय के लिए कवि का उद्देश्य उपयोग करना ही नहीं, उसमें निहित सम्भावनाओं का विस्तार करना भी है। अज्ञेय ने द्विवेदी युग से अब तक की कविता के इतिहास क्रम का उल्लेख इस प्रकार किया है– भाषा की खोज, फिर शब्द की खोज, फिर अर्थ की खोज। इससे भी उनकी प्रयोगशीलता का वह दायित्वपूर्ण पक्ष पहचाना जा सकता है जो परम्परा से नये सम्बन्ध बनाने की इच्छा का परिणाम है। अज्ञेय प्रयोगशील और आधुनिक हैं पर परम्परा से हटकर नहीं। परम्परा के तत्व उनके यहां बहुत गहरे जाकर अन्तः गठित है। व्यक्तित्व की खोज अज्ञेय की कविताओं की प्रयोगशीलता का केन्द्रीय तत्व है उन्हीं के शब्दों में–

यों मत छोड़ो मुझे सागर
कहीं मुझे तोड़ दो, सागर
कहीं मुझे तोड़ दो
मेरे चाहे को और मेरे जिये को
मुझको और मुझको और मुझको
कहीं मुझे जोड़ दो।

इस प्रकार हम देखते है कि अज्ञेय ने ही प्रयोगवादी नयी कविता और नये कवियों की पृष्टभूमि तैयार की। हिन्दी काव्य क्षेत्र में पदार्पण करने की प्रेरणा दी और उनकी सूक्ष्म मान्यताओं और उपलब्धियों की विशेष रूप से चर्चा की है। अज्ञेय प्रयोगवादी धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। प्रयागवाद के प्रवर्तक के रूप में अज्ञेय का विशिष्ट स्थान है। यह समय की रचनाओं में बुद्धिवाद निर्वैक्तिकता, अहंकार आदि के स्वर प्रधार रहे। प्रयोगवादी कविता नवीन वस्तु एवं प्रचीन शैली के संघर्ष के फलस्वरूप उत्पन्न हुई इसलिए उसमें नवीन शिल्प का आग्रह है। जिसमें नवीन प्रतीक एवं उपमानों को ग्रहण किया है। अस्तु! अज्ञेय के काव्य में वस्तु शिल्प और भाषा का रूप सम्यक रूप से देखा जा सकता है।

अज्ञेय की कविताओं में सबसे अधिक एक व्यक्तिनिष्ठ कवि का रूप दिखाई देता है। वहां न वह क्रान्तिकारी है और न समाज विद्रोही अपितु संसार के आकर्षण में आबद्ध एक व्यक्ति है, जो कभी प्रकृति की रमणीयता में शान्ति का अनुभव करता है तो कभी समाज की विविध समस्याओं में उलझा हुआ जान पड़ता है। इसी कारण वह पुकार उठता है–

मैं कवि हूँ
दश्टा, उन्मेश्टा
संधाता
अर्थवाद

कवि अज्ञेय ने एक क्षण की अनुभूति को अत्यन्त महत्व दिया है। इसी कारण अन्य प्रयोगवादी कवि भी क्षणानुभूति को अधिक महत्वपूर्ण समझते है। कवि जीवन के प्रत्येक क्षण को अमोघ मानता है, अजेय समझता है और स्वतन्त्र एवं स्वछन्द बताता है। कवि एक क्षण की सम्पूर्ण अनुभूति को आकुल व्याकुल होकर पी जाने के लिए छटपटाता रहता है। वह उस अनुभूति को शब्दों के घेरे में बांधकर रखना चाहता है, वह उस क्षण के सत्य का सुरभिपूर्ण स्पर्श पाना चाहता है, वह उस क्षक के आलोक से संपृक्त होकर विभोर हो जाना चाहता है, वह उस क्षण के जीवन को ही सर्वाधिक महत्व देता है और पुकार उठता है–

सत्य का सुरभिपूत स्प□ा हमें मिल जाये
क्षण भर
एक क्षण उसके आलोक से संयुक्त हो
विभोर हम हो सकें
और हम जीना नहीं चाहते!

अज्ञेय की कविताओं में जीतिव रहने की इच्छा भी अधिक तीव्रता एवं तीक्ष्णता के साथ व्यक्त हुई है। आज मानव एक ऐसे भयंकर चक्रवात में फंसा हुआ है कि उसका जीवन दूभर हो रहा है, वह अगणित समस्याओं के घेरे में आबद्ध है, उसे जीवन की अनेक उलझनों ने अत्यन्त जटिल जाल में फांस लिया है और वह जीवित रहने के लिए तड़प रहा है। कवि ने आधुनिक मानव की इस तड़पन, इसी आकुलावस्था एवं इसी उलझन भरी स्थिति का चित्र अंकित करने के लिए तथा जिजीविषा की धारणा को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए 'मछली' को प्रतीक बनाया है और 'बना दे चितेरे', 'सोन मछली', 'मछलियां', 'जीवन छाया', 'हेर रहा सागर' आदि कविताओं में इस जिजीविषा की भावना को इस तरह व्यक्त किया है–

सागर आंक कर फिर आंक एक उछली हुई मछली।

आज मानव कुण्ठा एवं पीड़ा का ऐसा शिकार बना हुआ है कि उसका जीना दूभर हो रहा है। ये कुण्ठायें, घुटन एवं बेबसी मानव को रात दिन संत्रस्त कर उसे चैन से बैठने नही देती, उसके मस्तिष्क में हलचल पैदा करती रहती है, उसे भ्रष्टाचार एवं अनाचार के लिए प्रेरित कर रही है, उसके मानसिक संतुलन को बिगाड़ रही है, उसके हृदय में क्षोभ एवं आक्रोश पैदा कर रही है, उसे झूठ बोलने के लिए विवश कर रही है और उसे चोरी, मक्कारी एवं अन्य दुष्कर्मो की ओर प्रवृत्त कर रही है। इन सबका कारण है आर्थिक असमानता एवं विषमतायें। ये विषमतायें आज मानव को केवल संत्रस्त ही नहीं करती, अपितु उसे धातु की तरह समाज की भट्टी में गला रही है, तभी तो कवि पुकार उठता है। अज्ञेय का यह भाव दृष्टव्य है–

भीतर जलते लाल धातु के साथ
कामकारों की दुस्साध्य विशमतायें भी तत्प उबलती जाती हैं।

कवि ने समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता एवं विषमताओं के प्रति आक्रोश, क्षोभ एवं घृणा ही व्यक्त नहीं की है, अपितु इस असमानता को मिटाने के लिए रक्तमयी क्रान्ति का भी आवाह्न किया है, इन विषमताओं को दूर करने के लिए संघर्ष की प्रेरणा भी प्रदान की है तथा इस भयंकर वैषम्य को हटाने के लिए 'अग्नि धर्म' के लिए प्रेरित किया है। इसीलिए कवि की हुंकार इन शब्दों में व्यक्त हुई है–

हमने न्याय नहीं पाया है हम ज्वाला से न्याय करेंगे।

कवि ने जहां सामाजिक जीवन में व्याप्त कुण्ठा, निराशा, बेबसी, घुटन, विषमता आदि के गीत गाये हैं, वहां नूतन सौन्दर्य बोध को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। कवि परम्परावादी नहीं है। वह नवीनता का पुजारी है।

इसीलिए कवि जब सौन्दर्य का चित्र अंकित करना चाहता है तब वह प्राचीन उपमानों, पुराने प्रतीकों एवं पुरानी पद्धति का प्रयोग नहीं करता अपितु एकदम नवीन पद्धति को अपनाता हुआ सौन्दर्य चित्र इस प्रकार अंकित करता है–

अगर मैं यह कहूँ
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की?

अज्ञेय ने जहां मानव जीवन के बारे में चिन्तन मनन करते हुए आधुनिक जीवन में व्याप्त विषमता, कुण्ठा, निराशा, क्षोभ, जिजीविषा आदि का चित्रण किया है वहां आत्मा एवं परमात्मा के बारे में चिन्तन मनन करते हुए आत्मा को परिणीता वधु एवं परमात्मा को महाशून्य के रूप में स्वीकार किया।

ओ आत्मा री
तू गयो वरी
ओ सम्पृक्ता
ओ परिणीता
महा□ून्य के साथ भांवरे तेरी रची गयी।

कवि का हृदय अपने देश के कण–कण में रमा हुआ है। उसे यहां की डगर–डगर से प्यार है, गांव–गांव में उसकी भावना रम रही है, शहर–शहर में उसके विचार मंडरा रहे हैं और झोपड़ी से लेकर हवेली तक वह अपने देश से परिचित है। कवि ने इसी स्वदेशानुराग से प्रेरित होकर ही कटु व्यंग लिखा है जिसमें देश की स्थिति कितनी स्पष्ट हो गयी है।

इन्हीं तृण फूस छप्पर से
ढंके ढुलमुल गंवारू
झोपड़ों में ही हमारा दे□ा बसता है
इन्हीं के ढोल मादल बांसुरी के
उमगते सुर से
हमारी साधना का रस बरसता है।

अज्ञेय का जीवन बहुत गतिशील रहा है। नयी–नयी व्यवस्था से बंधता, छूटता और टूटता जीवन विविध मानवीय प्रसंगों तथा स्थितियों का सहज साक्षात्कार करता रहा है। अज्ञेय क्रान्तिकारी नारेबाज़ नहीं बल्कि संघर्षो तथा क्रान्तियों के सक्रियकर्ता रहे। इनका व्यक्तित्व विविध गुणों से समन्वित रहा। छायावादी पृष्ठभूमि सेठने वाले अज्ञेय प्रयोगवाद तथा नई कविता के प्रवर्तक बन गये। ''तारसप्तक'' के सम्पादन तथा प्रकाशन से अज्ञेय की कविता का तेवर ही बदल गया। 'प्रतीक' पत्र के माध्यम से नयी कविता के आन्दोलन को शक्तिशाली बनाया। डॉ0 ओमप्रकाश अवस्थी ने अज्ञेय की काव्य यात्रा को इस रूप में प्रकट किया है– अज्ञेय की कविता पुराने को नया करने और नये को स्थापित करने की काव्य क्रीड़ा है। इस उत्तर दायित्व में अज्ञेय की कविता 'दृष्टिपथ' से भाव लोक और ज्ञान लोक की ओर चलती गयी है। प्रारम्भ के किशोर मन का चंचल क्रान्ति का पर्यावसन प्रौढ़ावस्था में दर्शन की चंचल भूमि की ओर होता गया है। विज्ञान की बौद्धिकता उसी प्रकार तत्व मीमांसा की ओर उन्मुख हुई है जिस प्रकार भावुकता का विलयन दार्शनिकता में हुआ है।

अज्ञेय अपने काव्य में अहं के प्रखर बोध, निविड़ संवेदनाओं की सघन अनुभूति एवं सघन अनुभूति की पीड़ा से विकसित प्रणय, व्यक्ति समाज संस्कृति के अर्न्तसम्बन्ध, संघर्ष एवं समर्पण को नये विम्बों, प्रतीकों तथा शब्द रूपों से अंकित करते हैं। उनमें क्षण की अनुभूति की ताज़गी तथा अद्वितीयता है।

अज्ञेय का रचनाकाल 1930 से आरम्भ होता है जेल जीवन में ही अज्ञेय को आत्म मंथ का अवसर मिला और उनकी साहित्य सृजन के प्रति गहरी निष्ठा उत्पन्न हो गयी। उन्होंने अपने काव्य की रचना सरल प्रेमी तथा क्रान्तिकारी बन्दी के रूप में शुरू की और वे निरन्तर जीवन, प्रकृति एवं विराट का सहारा लेकर सर्वत्र व्याप्त सौन्दर्य का साक्षात्कार करने लगे। वे जीवन में व्याप्त विषमताओं, कुण्ठाओं, विसंगतियों से संघर्ष करते हुए वास्तविकता को उजागर करने में जुड गये। हिन्दी काव्य में अज्ञेय द्वारा प्रवर्तित प्रयागवादी काव्य धारा का मूल स्रोत पाश्चात्य काव्य दिशा से आता है। अज्ञेय के इस कथन से स्पष्ट होता है– बन्द घर में प्रकाश पूर्व या पश्चिम किसी निश्चित दिशा से आता है, पर खुले आकाश में यह सभी ओर समाया रहता है। इसी में उसका आकाश तत्व है। उसी खुल आकाश को अपनी बाहों में भर सके यह लेखक का स्वप्न रहा हैं वह एक अन्वेषी कवि हैं तथा सभी से प्रेरणा प्राप्त कर नवीन मार्ग की खोज करने वाले अन्वेषक हैं। उनकी कविता व्यक्ति चेतना की कविता है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि कवि ने अपनी कविताओं में व्यक्ति के मन के भीतरी कक्षों में होने वाली सूक्ष्म अनुभूतियों को अंकित किया है। अज्ञेय का मत है आज का व्यक्ति अतृप्त इच्छाओं से भरा हुआ है। मन की झीनी पर्दो में छिपी हुई ऐसी अतृप्त इच्छाओं एवं कुण्ठाओं को प्रकट करना आवश्यक है। अज्ञेय की कविता में यह भाव छिपा हुआ दिखाई पड़ता है–

आह मेरा भवास है उत्तप्त
धमनियों में उमड़ आई है लहू की धार
प्यार है अभि□ाप्त
तुम कहां हो नारि।

अज्ञेय के कवि व्यक्तित्व की सहानुभूति पूर्वक पहचान की जाय, युग की सपेक्षता में देखा जये तो ओय की कविताओं में परम्परा और नवीनता का गठन हुआ है। अज्ञेय में परम्परा है, रुढ़ि नहीं, नवीनता है पर कोरी नवीनता नहीं, जो केवल उधार ली गयी चीज हो। अज्ञेय अपने युग में उन यथार्थवादी मनोवैज्ञानिक कथाकारों का लेखन भी जो क्रमशः सामाजिक यथार्थ या निजी यथार्थ के चौखटे बनाकर लिखते आये है।

अज्ञेय की कविताओं में सामाजिक स्वर की अनूगूंज अत्यन्त सशक्त एवं सजगता के साथ एवं प्रभावशाली है। 'मैं वहां हूँ' नामक कविता में उनकी जनवादी सामाजिक चेतना देखी जा सकती है तो कहीं उनकी रचनाओं में दार्शनिकता का पुट मिलता है। 'पान और फूल' सोन की मछली, नदी के द्वीप आदि रचनायें बौद्धिकता एवं दार्शनिकता का पुट लिये हुए है। और कुछ कवितायें ऐसी भी हैं जिसमें भावात्मक उदगार को लेकर लिखी गयी है। जैसे– ''भीतर जागा दाता'' ''बूंद सहसा मछली'' में आत्मसमर्पण की भावना विराट स्वरूप के प्रति अभिव्यक्ति हुई है। अज्ञेय के काव्य में मुख्यतया रहस्यात्मक या आध्यात्मिक अनुभूति प्रणयनुभूति एवं कुण्ठा और घुटन के भाव का निरूपण है। नदी के द्वीप में उनकी रहस्यवादी भावना झलकती है–

हम नदी के पुत्र हैं, बैठे नदी के क्रोड़ में।
वह वृहद भूखण्ड से हमको मिलाती है
और वह भूखण्ड हमारा पितर है।

वहीं उनकी इस कविता में आत्म विश्वास की झलक भी दिखाई देती है–

फिर छंनेगे हम, जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टिकेंगे।
कहीं फिर से खड़ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
माता, उसे फिर संस्कार तुम देना।

अज्ञेय के काव्य में क्षण महत्व है। क्षण विशेष की तीव्र अनुभूतियों की बजलियों में उनका काव्याकाश चमकता रहा। क्षण की अनुभूति की महत्ता बतलाते हुए कवि यहां तक कह जाता है कि यदि उसे क्षण भर के लिए सत्य का स्पर्श मिल जाये तो फिर और जीना व्यर्थ है–

सत्य का सुरभिपूत स्प□र्श हमें मिल जाये
क्षण भर
एक अं□ा उसके आलोक से संपृक्त हो
विभोर हम हो सके
और हम जीना नहीं चाहते।

अज्ञेय ने भाषा के प्रश्न को बहुत गहराई से अनुभव किया है। उनके लिए भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं है, वह रचनाकार व्यक्तित्व का पर्याय है। उन्होंने भाषा को अनुभव में खोजा है। इसलिए वह भाषा को नहीं, वरन शब्द की बात करते है, लेखक, कवि नित–नूतन अनुभवों के साथ अपने को जोड़ता रहता है, शब्द को बंधता रहता है, उनका सम्मान करता हैं अज्ञेय ने निरन्तर शब्द और सत्य को मिलाने की साधना की है। उनका कथन है कि हमें भाषा नहीं शब्दों से सरोकार है। यह शब्द ही सर्जना के वाहक है। 'नदी के द्वीप' की भाषा अर्थ का बड़ा सघन रूप प्रस्तुत करती है–

किन्तु हम हैं द्वीप, हम धारा नहीं।
स्थिर समर्पण है हमारा।
हम सदा से द्वीप है–स्त्रोतस्विनी के।

अज्ञेय के काव्य में भी पीड़ा का एक दर्शन देखने को मिलता है। उनके अनुसार पीड़ा या दर्द तो व्यक्ति के व्यक्तित्व को अग्नि में तपे कुन्दन की भांति निखार देती है। यह दर्द व्यक्तित्व का संस्कार करता है, आत्मा का परिष्कार करता है। सागर पर सांझ शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में दर्द का दर्शन देखने ही बनात है–

दर्द की अपनी एक दीप्ति है
ग्लानि वह नहीं देता
तुमने यदि, दर्द ही लिखा है
भद्दा कुछ नहीं लिखा, झूठ कुछ नहीं लिखा
ते आ"वस्त रहो
काल भी उसे एक ओप ही देगा और।

संदर्भित ग्रन्थ सूची

1. अज्ञेय : हिन्दी साहित्य का आधुनिक परिदृश्य
2. प्रसाद निराला अज्ञेय – राम स्वरूप चतुर्वेदी
3. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी– आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी
4. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
5. अज्ञेय : हरी घास पर क्षण भर
6. अज्ञेय : बावरा अहेरी
7. शेखर एक जीवनी : अज्ञेय
8. नदी के द्वीप : अज्ञेय
9. एक बूंद सहसा उछली : अज्ञेय
10. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
11. नयी कविता काव्य एवं विमर्श – डॉ0 अरुण कुमार
12. आधुनिक कवि – विश्वम्भर 'मानव', राम किशोर शर्मा
13. काव्य सृजन और शिल्प विधान : रोहिताश्व
14. अज्ञेय : सृजन और संघर्ष